भारत के संस्कृत साहित्य में कल्पसूत्रों का योगदान

RAMESH CHAND VERMA

Assistant Professor (Vidhya Sambal)
Govt. Girls college Todabhim,karauli

प्रस्तावना

हिन्दू धर्म के समस्तकर्म, संस्कार, अनुष्ठानतथारीतिनीतियाँ प्रायः कल्पसूत्रों से हीहोने के कारण संस्कृति के स्वरूपको समझने के ये एकमात्र अवलम्बनहैं।कल्पसूत्रों का आधारशिलाकर्मकाण्डहै। भारतवर्ष के प्राचीनइतिहास का अध्ययन करने से हमेंज्ञातहोताहैकिसम्पूर्णवेदांगसाहित्य में 'कल्प' का स्थानप्राथमिकहै। यज्ञीय विधियों का प्रतिपादन इस वेदांगमेंकियागया। इस शब्द का अर्थभीइसीप्रकारप्रस्तुतकियागयाहै– 'वैदिककर्मोंकोक्रमबद्ध व्यवस्थितकल्पनाकरनेवाला शास्त्र कल्पहै' (कल्पो वेदविहितानांकर्मणामनुपूर्व्येणकल्पना शास्त्रम्)। सायण ने भी 'कल्प' का लगभग यहीअर्थकियाहै– 'यज्ञीय प्रयोगों का समर्थनतथाप्रतिपादनकरने के कारण से 'कल्प' है।1 ये कल्पसूत्र अपनेविषय– प्रतिपादनमेंब्राह्मणोंऔरआरण्यकों से सम्बद्ध होने के कारणप्राचीनतमभीमानेजातेहैं।प्रत्येकसंहिता के अलग–अलगकल्पसूत्र प्राप्तहोतेहैं।

कल्पसूत्र चारप्रकार के हैं:श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्बसूत्र।

श्रौतसूत्र

इनकामुख्य विषय वेदप्रतिपादितविभिन्नमहत्त्वपूर्ण यज्ञों के विधि विधानोंकोसूत्र रूपमेंसंकलितकरनाहै।इन्हींश्रौतसूत्रों मेंदक्षिण, आहवनीय तथागार्हपत्य –इनतीनोंअग्नियों की स्थापना का विधानभीप्राप्तहोताहै, जिनमेंविभिन्नप्रकार के हविर्यज्ञतथासोमयज्ञसम्पन्नकिए जातेथे।प्रमुख श्रौतसूत्र ये हैं। ऋग्वेदीय–आश्वलायनतथा शांखयनश्रौतसूत्र। कृष्ण–यजुर्वेदीय–बौधयन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज, मानव एवंवाराहश्रौतसूत्र। शुक्ल यजुर्वेदीय–कात्यायनश्रौतसूत्र। सामवेदीय –आर्षेय अथवामशक, लाटयायन, द्राह्ययनतथाजैमिनीय श्रौतसूत्र। अथर्ववेदीय –वैतानश्रौतसूत्र।

गृह्यसूत्र

मनुष्य के जन्म से लेकरमृत्युतक के कर्त्तव्योंतथाअनुष्ठानों का सांगोपांगवर्णनगृह्यसूत्रों मेंप्राप्तहोताहै। ये गृह्यसूत्र नित्यप्रतिकिए जानेवाले धार्मिकविधानों के प्रयोग, विभिन्नगृह्य यज्ञोंतथामहोत्सवों की विधियों का वर्णनकरतेहैं।मनुष्य के विभिन्नसोलहसंस्कारों, पचमहायज्ञों, त्रिऋणों, सातपाकयज्ञों, गृहनिर्माण, गृहप्रवेशआदि का विस्तृतविधानगृह्यसूत्रों मेंकियागयाहै।रीति एवंउपचार का वर्णनइनकामुख्य विषय है।संस्कारों के सम्बन्ध मेंजोनियमों की सूचीप्राप्तहोतीहै।उससेभारतीय जीवन की पवित्रता का भलीभाँतिपरिचय प्राप्तहोजाताहै।प्रमुख गृह्यसूत्र ये हैं। ऋग्वेदीय –आवश्लायन, शांखायनतथाकौषीतकीअथ्वा शाम्बव्य गृह्यसूत्र। कृष्णयजुर्वेदीय –बौधायन, भारद्वाज, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशि, वैखानस, अग्निवेश्य, मानव, वाराहतथाकाठकगृह्यसूत्र। सामवेदीय –गोभिल, खादिरतथाजैमिनीय गृह्यसूत्र। शुक्लयजुर्वेदीय पारस्करगृह्यसूत्र अथर्ववेदीय –कौशिकगृह्यसूत्र।

धर्मसूत्र

विभिन्नपारमार्थिक, राजनैतिकतथासामाजिककर्त्तव्यों, चारोंवर्णोंतथाचारोंआश्रमों के कर्तव्य, विवाह, उत्तराधिकार, प्रायश्चितआदिसामाजिकनियमों एवं राजधर्म, प्रजाधर्मआदिविषयों का विवेचने धर्मसूत्रों मेंप्राप्तहोताहै।

अतः धर्मसूत्र गृह्यसूत्रों के ही एक अनुभाग के सदृश्य ज्ञातहोतेहैं।परवर्ती युगमेंइन्हीं धर्मसूत्रों से याज्ञवल्क्यस्मृति, मनुस्मृतिआदिस्मृतिग्रन्थों का विकासहुआ। धर्मसूत्र सम्बन्धीबहुतसासाहित्य लुप्तहोगयाहै।प्रमुख धर्मसूत्र ये हैं ऋग्वेदीय –वसिष्ठ एवंविष्णु धर्मसूत्र। कृष्ण यजुर्वेदीय बौधायन, आपस्तम्बतथाहिरण्यकेशि धर्मसूत्र। शुक्लयजुर्वेदीय –हारीततथा शंख धर्मसूत्र। सामवेदीय –गौतम धर्मसूत्र।

शुल्बसूत्र

शुल्ब का अर्थहोताहै–नापने की डोरी। नाम के अनुरूपहीइन शुल्बसूत्रों मेंवेदी के लिए स्थानचुनने, नापनेतथारचनाकरने से सम्बद्ध विषयों का विस्तृतविवरणप्राप्तहोताहै। यज्ञवेदीनिर्माण की रीति का विवेचनकियेजाने के कारण शुल्बसूत्रों का घनिष्ठसम्बन्ध श्रौतसूत्रों से है।क्योंकिश्रौतसूत्रों मेंजिन याज्ञिकविधानों का विवरणदियागयाथा, उनकीप्रक्रिया का पूर्णज्ञान एवंविनियोग शुल्बसूत्रों के बिनाहोहीनहींसकता। ये शुल्बसूत्र भारतीय ज्यामिति के प्राचीनतमग्रन्थहैं।प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानमैकडॉनल ने शुल्बसूत्रों की वैज्ञानिकता की घोषणाकरतेहुए कहा– 'इनसूत्रों मेंरेखागणित सम्बन्धीज्ञानबहुतआगे बढ़ा हुआपायाजाताहै।अथवा शुल्बसूत्र हीभारत के गणितशास्त्रीय सर्वप्राचीनग्रंथकहेजासकतेहैं।'2 प्रमुख उपलब्ध शुल्बसूत्र ये हैं। कृष्णयजुर्वेदीय –बौधायनआपस्तम्बतथामानव शुल्बसूत्र। शुक्लयजुर्वेदीय –कात्यायनशुल्बसूत्र।

भारतवर्षमेंरेखागणित के प्राचीनइतिहास की जानकारी के लिए शुल्बसूत्रों का अध्ययन आवश्यक है। शुल्बसूत्र बेदांग के अन्तर्गतकल्पसूत्र का अंग हैं।कल्पसूत्र का मुख्य विषय हैवैदिक कर्मकाण्ड। ये दोप्रकार के हैं–गृह्यसूत्र तथाश्रौतसूत्र, जिनमेंगृह्यसूत्र का मुख्य विषय हैविवाहादिसंस्कारों का वर्णनहै।श्रौतसूत्रों श्रुतिमेंप्रतिपादितनाना यज्ञ–याज्ञों का विवरणकियागयाहै। शुल्बसूत्र इन्हींश्रौतसूत्रों का एक उपयोगीअंशहै।

सिद्धान्त की दृष्टि से तोप्रत्येकवैदिक शाखा का अपनाविशिष्ट 'शुल्बसूत्र' होताहै, परन्तु ऐसीबातनहींहै।कर्मकाण्ड के साथसम्बद्ध होने के कारण शुल्बसूत्र यजुर्वेद की ही शाखा मेंपायेजातेहैं। यजुर्वेद की अनेक शाखाओं से शुल्बसूत्रों का अस्तित्वपायाजाताहै। शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध एक ही शुल्बसूत्र है–कात्यायन– शुल्बसूत्र परन्तुकृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित छः शुल्बसूत्र मिलतेहैं–बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, मैत्रायणीय, वाराहतथा वाधूल। इनके अतिरिक्तआपस्तम्ब–शुल्क (11/11) टीकामेंकरविन्दस्वामी ने मशक– शुल्बतथाहिरयण्केशी– शुल्ब का उल्लेख कियाहै, जोआजकलउपलब्ध नहींहैं।आपस्तब शुल्ब (6/10) मेंहिरण्यकेशी–शुल्ब से एक उद्धरणभीउपलब्ध होताहै।

इनसातउपलब्ध सूत्रों मेंबौधायन–शुल्बसबसेबड़ाहैतथाप्राचीनहै।इसमेंतीनपरिच्छेदहैं।प्रथमपरिच्छेदमें 116 सूत्र हैं, जिनमेंमंगलाचरण के अनन्तरवर्णनहै शुल्बमेंविविध मानों का (सूत्र 3–21), याशिकवेदियों के निर्माण के लिए मुख्य रेखागणितीय तथ्यों का (सूत्र 22–62) तथाविभिन्नवेदियों के स्थानतथाआकारप्रकार का (सूत्र 63'116)। द्वितीय परिच्छेदमें 86 सूत्र हैं, जिनमेंवेदियों के निर्माण के सामान्य नियमों के वर्णन (1–61 सूत्र) के पश्चातगार्हपत्य–चितितथाछन्दश्रिति 3 के बनावट का विवरणप्रस्तुतकियागयाहै।तृतीय परिच्छेदमें 326 सूत्र हैं, जिनमेंकाम्य इष्टियों के 17 प्रभेदों के लिए वेदि के निर्माण का विशदविवरणहै।इनमें से कईवेदियों की रचनाबड़ीहीपेचीदीहै, परन्तुअन्यों की रचना अपेक्षाकृतसरलहै।

संदर्भ

1. आपस्तम्ब शुल्ब 6/10 – 'छन्दक्षिति' मन्त्रों के द्वारानिर्मितवेदिहै।इसमेंवेदि का निर्माताबाज की
2. आकृतिवालीवेदिकी रूपरेखा पृथ्वी के ऊपर खींचतीहैतथामन्त्रों कोउच्चारणकरतीहै।
3. सायण – ऋग्वेदभाष्य भूमिका
4. मैक्डानल–संस्कृतसाहित्य का इतिहास, भाग–1 (हिन्दी) पृष्ठ–245.